स्वामी रामतीर्थ के राष्ट्रीय विचार

प्रकाशक
स्वामी रामतीर्थ मिशन (रजि०)
अलीगढ़

संकलनकर्त्ता
श्यामलाल कश्यप
एडवोकेट

मूल्य—स्वाध्याय

दो शब्द

आज विश्व में सर्वत्र अशांति ही अशांति दिखाई पड़तो है। चन्द सिरफिरे लोग भारतवर्ष को श्मशान में वदलना चाहते हैं। दुनिया मानो बारुद के ढेर पर बैठी है। अपने देश की भी कोई अच्छी दशा नहीं है! क्षेत्रीयता, भ्रष्टाचार, प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता, मतवाद, पाखण्ड अपने घिनौने रूप में उभर कर सामने आ गये हैं।

इस स्थिति से उभरने के लिये शहनशाह राम अद्वैत का सन्देश देते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि आज विश्व को स्वामी रामतीर्थ की जितनी आवश्यकता है उतनी पहले कभी नहीं थी।

इन पृष्ठों में स्वामी रामतीर्थ के जाने-माने व्याख्याता श्री श्याम लाल कश्यप, एडवोकेट, अलीगढ़ ने स्वामी राम के आलौकिक जीवन और उनके दिव्य विचारों की झाँकी प्रस्तुत की है। इस से आप सब का कल्याण हो, ऐसी मेरी कामना है।

प्रस्तुत पुस्तक के सम्पादन कार्य में मुझे स्वामी रामतीर्थ के दर्शन के मर्मज्ञ और सुविख्यात राष्ट्रवादी विचारक डा० वेदराम शर्मा का जो मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, उसके लिये मैं उनका हृदय से अभारी हूँ।

रमेश अरोड़ा
महामन्त्री
स्वामी रामतीर्थ मिशन (रजि०)
हरी ओ३म् नगर, मैरिस रोड,
अलीगढ़।

दिनाङ्क ४—११—१९८४

स्वामी रामतीर्थ का संक्षिप्त परिचय

स्वामी रामतीर्थ का जन्म सन् १८७३ में मुरालीवाला ग्राम गुजरावाला पंजाब में हुआ था। जन्म के बाद माता चल बसी, तब वह बड़े भाई गुरुदास व बड़ी चाची के हाथों पाले गये। विरोके से उनका विवाह छोटी उम्र में हुआ।

विद्यार्थी जीवन में कठोर संकल्प, १८८८ में हाई स्कूल, १८९० में इण्टर, १८९३ में बी० ए० तदुपरान्त एम० ए० गणित से किया।

१८९५ में स्कूल मास्टर का कार्य हाथ में लिया। १८९६ में फोरमैन क्रिश्चियन कालिज में गणित के मुख्य प्राध्यापक बने। इसी बीच विश्व के समस्त गूढ़तम साहित्य का मंथन किया। सारी-सारी रात रावी के किनारे जाग-जाग कर अद्वैत की स्थापना की। इसी बीच उनका जगत्-विख्यात निबंध (How to Study Mathematics) छपा और उन्होंने एक अनोखे पत्र अलिफ का सम्पादन किया। यकायक उनकी भेंट स्वामी विवेकानन्द से हुई और १९०१ के जुलाई मास में हिमालय के घनघोर जंगलों में खो गये। लम्बी-लम्बी पद यात्राएं कर भारत को एक सिरे से दूसरे सिरे तक अनुभव किया। जापान गये और वहाँ से अमेरिका १९०४ में भारत लौटे, १९०६ में मौत को हुक्म दिया और संसार की महानतम् आत्मा सर्वदा के लिए कोटि-कोटि विश्व वासियों को जगा कर, कभी न भंग होने वाली गहन निद्रा में सो गयी।"

उन्होंने कहा था "हाथ में लिया हुआ काम मुझसे पूरा होता न जान पड़ता हो 'परन्तु मैं जानता हूँ कि मेरे चले जाने के बाद वह किसी समय अवश्य होगा और अधिक अच्छी रीति से होगा। जो विचार मेरे मन में भरे हैं धीरे-धीरे काल पाकर समाज में फैलेंगे जब मैं सारे मनसूबों, इच्छाओं और उद्देश्यों को त्याग कर परमात्मा में अपने को लीन कर दूँगा।"

I उद्‌बोधन

भारत माता

"ऐ डूबते हुये सूर्य ! तू भारत भूमि पर निकलने जा रहा है। क्या तू कृपा करके राम का यह संदेशा उस तेजोमयी प्रतापी माता की सेवा में ले जायगा ? क्या ही अच्छा हो यदि यह मेरे प्रेम-पूर्ण आँसू भारत के खेतों में पहुँच कर ओस की बूदें बन जाएँ। जैसे एक शैव शिव की पूजा करता है, वैष्णव विष्णु की, बौद्ध बुद्ध की, ईसाई ईसा की और मुसलमान मौहम्मद की, वैसे ही मैं प्रेमाग्नि में निमग्न चित्त से भारत को पूजता है। ऐ भारत माता मैं तेरे प्रत्येक रूप में तेरी उपासना करता हूँ। तू ही मेरी गर्भा है, तू ही मेरी काली देवी है, तू ही मेरी इष्ट देवी है, तू ही मेरा सालिगराम है, भगवान कृष्णचन्द्र जिनको भारत की मिट्टी खाने की रुचि थी। भारत माता के प्रत्येक पुत्र से मैं ऐसा क्रियात्मक सहयोग चाहता हूँ जिससे वह चारों ओर दिन-प्रतिदिन बढ़नेवाले राष्ट्रीय जीवन का संचार कर सके। समस्त भारत मेरा ही शरीर है।"

—※—

हिन्दी भाषा

राम हिन्दी अक्षरों की सिफारिश करता है क्योंकि वहुत शीघ्र हिन्दी भारत वर्ष की राष्ट्रीय भाषा हुआ चाहती है।

—※—

मैं भारतवर्ष हूँ—व्यावहारिक वेदान्त

'मैं समस्त भारतवर्ष हूँ, भारत भूमि मेरा अपना शरीर है, कन्या कुमारी मेरा पाँव है। हिमालय मेरा शिर है। मेरे वालों में श्री गंगाजी वहती हैं। मेरे सिर से सिन्धु और ब्रह्मपुत्र निकलते हैं। विन्ध्याचल मेरी कमर के गिर्द कमरवन्द है। कुरुमण्डल मेरी दाहिनी और मलावार वाँई जंघा है। मैं समस्त भारतवर्ष हूँ। इसकी पूर्व और पश्चिम दिशाएँ मेरी दोनों भुजाएँ हैं और मनुष्य जाति को आलिंगन करने के लिये मैं उन भुजाओं को सीधा फैलाता हूँ। आहा ! मेरे शरीर का ऐसा ढांचा है। यह सीधा खड़ा है और अनन्त आकाश की ओर दृष्टि दौड़ा रहा है। परन्तु मेरी वास्तविक आत्मा सारे भारतवर्ष की आत्मा है। जव मैं चलता हूँ तो अनुभव करता हूँ कि यह सारा भारतवर्ष चल रहा है। जव मैं वोलता हूँ तो भान करता हूँ कि यह भारतवर्ष वोल

रहा है। जब में श्वास लेता हूँ तो महसूस करता हूँ कि यह भारतवर्ष श्वास ले रहा है। मैं भारतवर्ष हूँ, मैं शंकर हूँ, मैं शिव हूँ।

स्वदेश भक्ति का यह अति उच्च अनुभव है और यही व्यावहारिक वेदान्त है।

—०—

हिन्दू जाति-अजर-अमर

एक वह दिन था कि यूनानियों के दल बादल लश्करों की दौड़-धूप से भूमि कांपती थी। आज सैलकुश और सिकन्दर (जिसे इतिहास में भूल से महान् कह दिया) के देश की कहानी बाकी रह गई है। एक दिन वह था कि रूम की राजधानी की ध्वजा भूमण्डल के लगभग प्रत्येक स्थान पर लहराती थी। आज कैसरों (सीजर्स) के सिंहासनों पर मकड़ियाँ जाले तान रही हैं। एक वह दिन था कि अफराकियाब फरे दूँ और कैकोस की असंख्य-सेनाएँ और घोड़ों की टापों से सुविस्तृत-अरण्यों में पृथ्वी छह और आसमान आठवां हो गया का मामला हो रहा था। आज वही मुट्ठी भर रुस्तमजी, सोहराब जी फारस से अलग होकर भारतवर्ष में काल व्यतीत कर रहे हैं। मुगलों का चमकता चाँद भी दो दिन की चमक-दमक दिखाकर बिलकुल फीका पड़ गया और कई बलसम्पन्न साम्राज्य सागर की लहरों की भांति उत्पन्न होकर मिट गये। रुम के बादशाह के महल पर मकड़ी पहरादारी करती, और उल्लू अफरसियाब के गुंबद पर अब नौबत बजा रहा है और अब वहाँ मनुष्य के स्थान पर उल्लू बोल रहा है।

किन्तु वह (हिन्दू) जाति जो यूनानियों के प्रकाश (ज्ञान) का स्रोत थी उस समय उपस्थित थी जब रूमी साम्राज्य की नींव भी नहीं पड़ी थी और जब वर्तमान समय की योरोपीयन शक्तियाँ (राष्ट्रों) के पिता पितामह जर्मनी के जंगलों में नग्न फिरते थे जिसके आदि के पता लगाने में इतिहास की आंखे फटती हैं वह (हिन्दू) जाति अपने देश में आज तक बीस करोड़ (स्वामी राम के समय में हिन्दुओं की संख्या) मौजूद है और बढ़ती फैलती रहेगी। क्यों ? क्योंकि उनका प्रत्येक वाक्य ओ३म् आनन्द से आरम्भ होता है और शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!! पर खतम होता है। ईश्वर का अनुग्रह इस जाति पर है और रहेगा।

—०—

हिन्दू के लक्षण

हिन्दुओं में हमको नुकता चीनी का भाव नहीं जाग्रत करना है किन्तु जाग्रत करना है गुणग्राहकता, भ्रातृत्व की भावना, समन्वय की बुद्धि, कार्यों और श्रम-गौरव में सहयोग।

यदि कोई बालक ईसाई (मुसलमान आदि) हो जाता है तो वह अपने हिन्दू पिता का हाड़ मांस होते हुये भी गली के कुत्ते से अधिक गयाबीता (अपरिचित) हो जाता है।

—✽—

उठो जागो

उठो जागो अब सोने का समय नहीं रहा। आदर्श स्वरूप प्रतापी गुरु गोविन्दसिंह का राष्ट्रीय धर्म के लिये अपने व्यक्तिगत घरेलू और सामाजिक धर्म को त्याग देने की वीरता के बराबर और क्या वीरता हो सकती है ? लोग शक्ति प्राप्त करने के पीछे मरे जाते हैं किन्तु ये नहीं समझते कि राष्ट्र की समष्टि आत्मा के साथ अपनी व्यष्टि आत्मा के अभेद करने पर उनके हाथ में कितनी अनन्त शक्ति आ जायगी। ओ३म् ! ओ३म् !!

—✽—

मेरे भाई

ईसाई, हिन्दू, पारसी, आर्य समाजी, सिक्ख, मुसलमान और वे लोग जिनके पुट्ठे, हड्डियाँ, तथा मस्तिष्क मेरी प्यारी इष्टदेवी भारतभूमि के अन्न और नमक खाने से बने हैं, वे मेरे भाई हैं। नहीं नहीं मेरा अपना आप हैं। उनसे कह दो कि मैं उनका हूँ। मैं सबको हृदय से लगाता हूँ, किसी को अलग नहीं करता। मैं प्रेम रूप हूँ। प्रकाश के समान प्रत्येक पदार्थ को, सबको प्रकाश की किरणों से भर देता हूँ। मैं सबसे प्रेम करता हूँ।

—✽—

माँ की महिमा

हिन्दू के अन्तःकरण की पवित्र भावना (माँ) शब्द से प्रकट होती है।

—✽—

स्त्री शिक्षा

यदि भारतवर्ष को जीवित रहना है तो स्त्री-शिक्षा का अत्यंत विस्तार के साथ प्रचार करना पड़ेगा।

राष्ट्रीय एकता

राष्ट्रीय हेमन्तोत्सव दक्षिण भारत के सुखदायक प्रदेशों में, राष्ट्रीय ग्रीष्मोत्सव उत्तरी पर्वतों के प्राकृतिक दृश्यों में, वसन्तोत्सव वंग देश में, और शरद ऋतु का सम्मेलन पश्चिमीय हिन्दुस्तान में होना चाहिए। राष्ट्रीय एकता की वृद्धि में एक दूसरा साधन है राष्ट्रीय सहित्य का उत्पादन उसकी उन्नति, उसकी परिष्कृति।

—※—

भारत का पतन

भारत वर्ष का पतन वेदान्त के अभाव से हुआ।

—※—

अलमारियों में वन्द वेदान्त की पुस्तकों से काम न चलेगा। तुम्हें उनको आचरण में लाना होगा।

—※—

शंख नाद

चाहे अकेले, चाहे अनेक शरीरों द्वारा काम करते हुए राम गम्भीरता पूर्वक प्रतिज्ञा करता है कि दस वर्ष के भीतर भारतवर्ष से अंधकार और दुर्बलता को दूर कर वह उसमें सच्चा जीवन भर देगा और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध्य के पहले भारतवर्ष पुनः अपने पूर्व गौरव पर प्रतिष्ठित होगा आप राम के शब्दों को नोट करलें।

जनसंख्या

यदि जन-संख्या की समस्या विना हल हुए, रह गई तो राष्ट्रीय एकता और परस्पर मेल-मिलाप की वातचीत आकाश-पुष्प के समान कल्पना मात्र रहेगी।

II प्रेरक प्रसंग

मृत्यु ये नहीं पूछती कि तुम्हारे पास क्या है, किन्तु यह कि तुम हो क्या ? जीवन का प्रश्न यह नहीं मेरे पास क्या है किन्तु मैं हूँ क्या ?

—:※:—

जब राम जापान से अमेरिका गये तब सनफ्रांसिस्को बन्दरगाह पर वे जहाज की डेक पर घूमने लगे। एक अमरीकन उनकी मस्ती से चकित होकर उनके पास आकर पूछने लगा।

आपका रुपया पैसा कहाँ है।

मैं रुपया अपने पास नहीं रखता

फिर आपका जीवन कैसे चलता है ?

जब प्यास होती है पानी, जब भूख लगती है खाना हाजिर होता है ।

किन्तु क्या अमेरिका में भी आपके कोई ऐसे मित्र हैं ?

हाँ हैं क्यों नहीं, मैं केवल एक अमरीकन को जानता हूँ वो तुम हो । यह कहकर स्वामी ने उसके कन्धे को छू लिया वह अमेरिकन उनका हृदय से दास हो गया ।

—:❀:—

एक बार किसी पर्वत की यात्रा पर भयानक बरसाती तूफान आ गया उनके साथ चार हट्टे-कट्टे पहाड़ी एक एक करके गिर गये । तूफान सघन होता देख एक शिष्य ने कहा, "स्वामी जी ! मैं मरा" स्वामी ने मुस्कराकर प्रकृति को आदेश दिया "शान्त हो" और लो क्षण भर में ही तूफान शांत हो गया ।

—❀—

एक बार परीक्षा में एक प्रश्न पत्र में लिखा था कोई से ६ प्रश्न १३ में से करिए (Solve any Six out of thirteen) स्वामी राम ने १३ प्रश्न हल करके नीचे लिखा कोई से ६ देखिए (See any six out thrteen.)

—❀—

हालीवुड की एक बहुत धनी सुन्दर अभिनेत्री ने अपना सर्वस्व स्वामी राम को देने की पेशकश की शर्त थी कि स्वामी राम अपने पैन से उसकी डायरी में लिखें कि वह उनकी पत्नी है । स्वामी राम ने मुस्कराकर उसकी डायरी में लिखा तुम मेरी पवित्र माँ हो ।

—❀—

जब राम अमेरिका में था तो सर पर पगड़ी हिन्दुस्तानी थी किन्तु बाजारों में बर्फ होने के कारण जूता उसी देश का था । लोगों ने कहा जूता भी हिन्दु-स्तानी क्यों नहीं रखते ? राम ने उत्तर दिया, सर तो हिन्दुस्तानी रखूँगा किन्तु पाँव तुम्हारे लें लूँगा । राम तो चित्त से यह चाहता है कि आप हिन्दु-स्तानी बने रह कर अमेरिका आदि से बढ़ जाएँ ।

—❀—

यमुनोत्री की यात्रा के समय स्वामी जी को बताया गया कि अमुक गुफ़ा में जो गया है वो वापिस जिन्दा नहीं लौटा । स्वामी जी उसमें एक महीने तक रहे उसमें बड़े-बड़े बिषधर थे और बाहर थे भयानक शेर ।

पुष्कर मगर मच्छों की झील में आधा घंटा नहाते समय मगर-मच्छ हजारों की संख्या से उनके इर्द-गिर्द आ गये उनके शिष्य जो उनके पीछे पीछे थे घबरा गए, स्वामी जी ने बड़े प्रेम से उनसे दुलार किया और बोझल दिल से उनसे विदा ली।

—✿—

स्वामी जी ने विद्यार्थी जीवन में ये कठोर व्रत लिया कि बिना किसी की सहायता के गणित की सभ्यताओं को हल करेंगे एक दिन सुबह से शाम, शाम से सुबह हो गई प्रश्न हल नहीं हुआ उन्होंने मकान की छत पर चढ़कर जीवन का अंत करने को चाकू गर्दन पर रखा तभी विश्व की अद्वितीय घटना हुई उस प्रश्न का हल सुनहरी अक्षरों में आकाश पर लिख गया।

—✿—

एक बार पोर्ट सईद में लार्ज कर्जन के साथ एक ही जहाज में भारतवर्ष आने से राम ने यह कहकर इन्कार कर दिया कि दो बादशाह एक साथ एक नाव में नहीं जा सकते। उन्होंने अपनी यात्रा रद्द कर दी और दूसरे जहाज से भारत आये।

—✿—

अध्यात्मिक अनुभवों की प्रारभिक मंजिल पर स्वामी जी ने लक्ष्मन झूला से कुछ आगे एक पहाड़ से गंगाजी में छलांग लगा दी। मां गंगा ने उनको एक चट्टान पर बैठा दिया और वहीं उनको समाधि हो गई और अभीष्ट की प्राप्ति हुई।

—✿—

भागती फिरती थी दुनियाँ जब तलब करते थे हम
अब जो नफरत हो गई वो बेकरार आने को हैं।

—✿—

बाँधे हुए हाथों को बा उम्मीद इजाअत
रहते हैं खड़े सैंकड़ों मजमूँ मेरे आगे।

—✿—

कोई मनुष्य परमात्मा से अपनी अभेदता तब तक नहीं कर सकता जब तक कि समग्र राष्ट्र के साथ अभेदता उसके रोम-रोम में जोश न भरती हो।

✿—✿

राष्ट्र के हित के लिए प्रयत्न करना ही देवताओं की आराधना है।

✿—✿

किसी देश की उन्नति छोटे विचार के बड़े आदमियों पर नहीं किन्तु बड़े विचार के छोटे आदमियों पर है।

—❁—

यदि विदेशों में अपना निर्वाह करने के सिवा तुम अपने देश के लिए कुछ नहीं कर सकते तो वहीं रहो और यदि तुम्हें भारत माता की दुखती छाती पर रेंगती हुई जोंक बनना पड़े तो अरब सागर में कूद पड़ो।

—❁—

मेरे प्यारे हिन्दुओ! परिवर्तन अथवा समय अनुकूल बनने से घृणा करके और पुरानी रीतियों तथा वंश परम्परा पर अत्यन्त जोर देकर अपने को मनुष्यता के आसन से नीचे मत गिराओ।

—❁—

III काव्यामृत

जो तू है सो मैं हूँ जो मैं हूँ सो तू है।
न कोई आरजू है न कोई जुस्तूज है॥
बसा राम मुझमें मैं अब राम में हूँ।
न इक है न दो हैं फक्त तू ही तू है॥
उठा जबकि माया का पर्दा ये सारा।
किया गम खुशी ने भी मुझसे किनारा॥
जुबां को न ताकत न मन को रसाई।
मिले अब मुझे मेरी ही बादशाही॥
जहां मैं हूँ फरिश्तों से वहां आया
नहीं जाता।
किसी से मेरी मंजिल का पता
पाया नहीं जाता।

—❁—

शहनशाहे जहान है सामल हुआ है तू।
पैदा कुने जपान हैं डायल हुआ है तू॥
सौ बार हो गरज तो धो धो पिये कदम।
क्यों चर्खो मिहरो माह पर मायल हुआ है तू॥
खंजर की क्या मजाल कि एक जखम कर सके।
तेरा ही है खयाल कि घायल हुआ है तू॥

क्या शाह को गदा का राजिक है कोई और ।
दूध लासो तंगदस्ती का कायल हुआ है तू ।।
टाईम तो है तेरे मुजरे के मौके की ताक में ।
क्यों डर से उनके मुफ्त में जायल हुआ है तू ।।
हमवाल तुझसे रहता है हर आन राम तो ।
खुद बन के पर्दा वस्ल में घायल हुआ है तू ।।

मोहब्बत की नहीं जाती मोहब्बत हो ही जाती है ।
यह शोला खुद भड़क उठता है भड़काया नहीं जाता ।।
मोहब्बत के लिये कुछ खास दिल मखसून होते हैं ।
ये वो नगमा है जो हर साज पै गाया नहीं जाता ।

—※—

हम रूखे टुकड़े खायेंगे, भारत पर वारे जायेंगे ।
हम सूखे चने चवायेंगे, भारत की बात बनायेंगे ।
हम नंगे उमर बितायेंगे, भारत पर जान मिटायेंगे ।
सूलों पर दौड़े जायेंगे, कांटों को राख बनायेंगे ।
हम दर दर धक्के खायेंगे, आनन्द की झलक दिखायेंगे ।
सब रिस्ते नाते तोड़ेंगे, दिल इक भारत संग जोड़ेंगे ।
सब विषयों से मुंह मोड़ेंगे, सिर सब पापों का फोड़ेंगे ।

—※—

"रोशनी पर कर सवारी
आंख से कर नूर बारी
हर दिलो–दीदा में जा झण्डा
अलिफ का गाड़ दे ।"

मैं खेलता हूं होली, दुनियां से गेंद गोली,
ख्वाह इस तरफ को फेंकू, ख्वाह उस तरफ चला दूं
डट कर खड़ा हूं खौफ से खाली जहान में
तस्कीने दिल भरी है मेरी दिल वो जान में हैं
सूदों जमां जर्का है मेरे पैर मिस्ले संग
मैं कमों कर आसकूं हूं कैदो ब्यांन में

शहनशाह दूनियां के मोहरे हैं मेरी शतरंज के
दिल्लगी की चाल है सब रंग सुलह व जंग के
रक्शे शादी से मेरे जब कांप उठती है जमीं
खिल खिलाता कहकहाता मैं वहीं ।
हवा इसके लियां करती हैं मेरे इक इशारे पर
हैं कौड़ा मौत पर मेरा अहा ! अहा ! अहा !
अजर है आत्मा मेरी कजा से मैं नहीं डरता
मेरे ऐमाल अच्छे हैं खुदा से मैं नहीं डरता।

—✽—

तमाम दुनिया है खेल मेरा मैं खेल सबको
खिला रहा हूं।
किसी को वेसुध बना रहा हूं किसी को
गम में रुला रहा हूं।
कभी मैं दिन में निकालूं सूरज
कभी मैं सबको दिखाऊँ तारे।
ये जोर मेरा है दोनों पावों को
मिसले फिरकी फिरा रहा हूं।

—✽—

अपने मजे के खातिर गुल तर्क कर दिये जव
सारे जमी के गुलशन मेरे ही बन गये तव।
मैंने माना दहर को तूने किया पैदा वले।
मैं वो खालिक हूँ मेरी कुन से खुदा पैदा हुआ।

—✽—

न वाकी छोड़ेंगे इलम कोई
थे इस इरादे पै जम के बैठे
हैं लिखा पिछला पड़ा भी
गायब खड़े हैं रोम और गला रुके हैं
अकल नहीं चाहिए हमको
पागलपन दरकार

—✽—

राम को हमने जावजा देखा
कभी बंदा कभी खुदा देखा

—❁—

एक नुक्से विच गल्ल मुकदी है
फड़ नुकदा छोड़ कितावां नूँ
दे फूंक हिसाब् कितावाँ नूँ
कर साफ दिलादे ख्वाबां नूँ
इक अलिफ पढ़ो छुटकारा है
इक़ अलिफ पढ़ो छुटकारा है

—❁—

मैं न बन्दा न खुदा था मुझे मालुम न था
दोनों इल्लत से जुदा था मुझे मालुम न था

—❁—

दुई का तजकरा तौहीद में पाया नहीं जाता
जहाँ मेरी रसोई है मेरा साया नहीं जाता।

—❁—

卐 प्रार्थना 卐

ईश्वर प्रभु प्यारे विनती सुनो हमारी ।
हम हैं अनाथ अति ही आये शरण तुम्हारी ॥
गुजरी उमर हमारी पापों में हे पिता जी ।
दुःखों पै दुःख देखे पाये हैं कष्ट भारी ॥
तापों ने है तपाया शान्ती ने मुख छिपाया ।
दिल तड़पता हमेशा नैनों से नीर जारी ॥
विषयों की आदतों ने तन मन बिगाड़ डाला ।
नहीं चैन इक घड़ी भी हरदम है बेकरारी ॥
कृपा से अपनी तूने जो दाद दी थी हमको ।
गफलत में आके हमने बरबाद करदी सारी ॥
किश्ती हमारे दिल की फँस मोह के भँवर में ।
खाती पड़ी है धक्के फिरती है मारी मारी ॥
मन, आँख, कान, जिह्वा वश में नहीं हमारे ।
आकर के तंग इनसे करते हैं गिरियाँ जारी ॥
तुम बिन नहीं है भगवन् कोई दर्दखाह अपना ।
खुदगर्ज नजर आवे बाकी है दुनियाँ सारी ॥
हम तुम असल में एको कहते हैं वेद यह जो ।
पर्दा उठा दिखा दो अपनी शकल प्यारी ॥
हो बेउमीद सब से रख आस एक 'गोविन्द' ।
आये हैं दर पै तेरे राखो हमें मुरारी ॥

—: आरती :—

आरती लीजै अज अविनाशी,

पूरण परमानन्द प्रकाशी ।

नभ अरु धरणी आरती थाला,

चन्द्र सूरज दोऊ दीप उजाला,

अगर चन्दन सब धूप विराजै,

झूला मेरु चँवर तरु राशी (आरती०)

फूल वनस्पति है सारी,

सातों सागर जल की झारी,

गगन अनहद बाजे बाजें,

गाजै राग डरे यम पाशी (आरती०)

चार प्रकार के अन्न गोपाला,

सोई तेरो भोग रसाला,

लोग चतुर्दश मंदिर तेरो,

घट-घट आसान स्वयं विकाशी (आरती०)

महावाक्य वेदन के जो हैं,

सो तेरो चरणामृत सो हैं,

गुरु पुजारी दे चरणामृत,

पियें नारि-नर बंध विनाशी (आरती०)

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदम्, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।

पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमवावशिष्यते ॥

ॐ शांतिः ! शांतिः ! ! शांतिः ! ! !

पीवीएस इण्ड० का० सो० लि० प्रेस, ऊपर कोट, अलीगढ़ । फोन : ३५०२